■ रचनावली

शिक्षा के बुनियादी प्रश्न

मदन कश्यप

गिजुभाई रचनावली
अनु.: रामनरेश सोनी
सर्जना प्रकाशन, बीकानेर, राजस्थान
कीमत: 755 रु. (12 खंड)

भारत की विडंबना यह है कि यहां दुनिया के सर्वाधिक आइटी प्रोफेशनल और सर्वाधिक निरक्षर लोग एक साथ रहते हैं. आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी देश की एक बड़ी आबादी का अनपढ़ होना अब केवल चिंता की नहीं, शर्म की बात है. हालांकि देश को इस शर्मनाक स्थिति से बाहर निकालने के लिए अब कुछ ठोस पहल की जा रही है. इसी क्रम में पिछली सदी के अंतिम दशक में जब सर्वशिक्षा अभियान को तेज किया गया, तो पूरे देश में जिस एक शिक्षाविद् की याद सबको आई, वे हैं 1939 में दिवंगत हो चुके गुजरात के शिक्षक गिजुभाई. इसका एक कारण यह था कि आज़ादी के संघर्ष के दौरान राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा के महत्व को समझते हुए भी इसे सर्वव्यापी बनाने की ठोस पहल नहीं की गई. स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक की स्थापनाएं तो हुईं लेकिन पश्चिमी शिक्षा के मॉडल से अलग कोई देशज मॉडल विकसित करने का प्रयास नहीं किया गया. हमारे शिक्षाविद् या तो पश्चिमपरस्त रहे अथवा अपनी प्रासंगिकता खो चुके गुरुकुलों के समर्थक पुराणपंथी, जबकि जरूरत नए समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप एक नई शिक्षा पद्धति विकसित करने की थी. आज़ादी के बाद कुछ प्रयोग हुए भी तो आधे-अधूरे. बुनियादी शिक्षा का ध्यान विद्यालय में पढ़ाई के साथ कुछ अन्य गतिविधियों को शामिल करने पर तो था लेकिन भारतीय बच्चों को पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए, उनके भीतर छिपी हुई प्रतिभा को कैसे पहचाना जाए, उनके टेढ़े-मेढ़े प्रश्नों के कैसे उत्तर दिए जाएं, जैसे बुनियादी मसलों पर गौर नहीं किया गया.

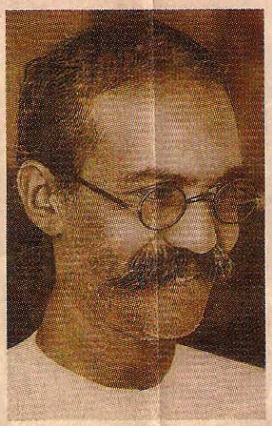

रचनात्मक प्रयोग: गिजुभाई

गिजुभाई शायद ऐसे अकेले शिक्षक थे, जो आज़ादी के काफी पहले इन सवालों पर गंभीरता से विचार कर रहे थे. 15 नवंबर 1885 को सौराष्ट्र में पैदा हुए गिजु भाई ने अपने सक्रिय जीवन की शुरुआत विदेश से की. 1909 में पूर्वी अफ्रीका से स्वदेश वापस आने के बाद मुंबई में कानून की पढ़ाई की और हाइकोर्ट प्लीडर बन गए. श्री दक्षिणामूर्ति भवन से पहले वे कानूनी सलाहकार के रूप में ही जुड़े, पर आगे चलकर विद्यार्थी भवन से जुड़ गए. 1920 में उन्होंने बाल मंदिर की स्थापना की. फिर तो अपना पूरा जीवन ही बाल शिक्षा में लगा दिया. बच्चों की प्रतिभा को उभारने और उनकी सृजनात्मक क्षमताओं को सामने लाने के लिए वे तरह-तरह के प्रयोग करते रहे. शिक्षा से संबंधित उनकी पुस्तकों में इन्हीं प्रयोगों और अनुभवों को संकलित किया गया है. उन्होंने अपनी सफलताओं के साथ-साथ अपनी असफलताओं को भी दर्ज किया और उससे सीखा भी. उनकी विशेषता यह थी कि वे अपना दिमाग हमेशा खुला रखते थे और